भाषा-समृद्ध कक्षा

भारत में विद्यालय आधारित समर्थन के माध्यम से शिक्षक शिक्षा

www.TESS-India.edu.in

http://creativecommons.org/licenses/

संदेश

शिक्षकों को बाल केंन्द्रित कक्षा अभ्यास की ओर उन्मुख करने तथा शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को सम्मुख रखते हुए TESS-India राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत है। इस दिशा में TESS-India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources) का विकास किया गया है । ये संसाधन शिक्षकों तथा शिक्षक–प्रशिक्षकों के वृत्ति विकास (Professional development) में लाभकारी एवं उपयोगी सिद्ध होंगे। राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार के नेतृत्व में इन संसाधनों का स्थानीयकृत किया गया है, जिसके अन्तर्गत इनके उद्देश्य के मूल को बरकरार रखते हुए इनमें स्थानीय, भाषा, बोली, प्रथाओं, संस्कृतियों तथा नियमों को सम्मिलित किया गया है। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता एवं सुगमता पूर्वक किया जा सकता है ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार के मार्गदर्शन में TESS-India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources) नेट पर आप सभी के लिए सुलभ उपलब्ध है ।

शुभकामनाओं सहित ।

(डॉ0 मुरली मनोहर सिंह)
निदेशक
एस0सी0ई0आर0टी0, बिहार

समीक्षा एवं दिशाबोध
डॉ. मुरली मनोहर सिंह, निदेशक राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. सैयद अब्दुल मोईन, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. क़ासिम खुर्शीद, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
डॉ. इम्तियाज़ आलम, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. स्नेहाशीष दास राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. अर्चना, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. रीता राय, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
श्री तेज नारायण प्रसाद, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

स्थानीयकरण
भाषा और शिक्षा
डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एडुकेशन एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर, वैशाली
श्री सुमन सिंह, प्रखंड साधनसेवी, भगवानपुर हाट, सिवान
श्री कात्यायान कुमार त्रिपाठी, प्राथमिक विद्यालय चैलीटाल, पटना
श्री कृत प्रसाद, प्रखंड साधनसेवी, हिलसा, नालंदा
प्राथमिक अंग्रेज़ी
श्री अरशद रज़ा, सहायक शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय, पचासा रहुई, नालंदा
श्री संतोष सुमन, सहायक शिक्षक, बालिका उच्च विद्यालय, महुआबाग
श्री शशि भूषण पाण्डेय, सहायक शिक्षक, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, मुकुन्दपुर, नालंदा
श्रीमती रचना त्रिवेदी, शिक्षिका, नोट्रेडेम अकादमी, पटना
माध्यमिक अंग्रेज़ी
श्री मणिशंकर, प्रधानाध्यापक, तारामणी भगवानसाव उच्च माध्यमिक विद्यालय, कोइलवर, भोजपुर
डॉ. ब्रजेश कुमार, शिक्षक, पी. एन. एंग्लो संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, नया टोला, पटना
प्राथमिक गणित
श्री कृष्ण कान्त ठाकुर
श्री दिलीप कुमार, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, बुलनी हैदरपुर, नालंदा
श्री गोविन्द प्रसाद, प्रखंड साधनसेवी, चनपटिया, पश्चिमी चम्पारण
माध्यमिक गणित
डॉ. राकेश कुमार, भागलपुर डायट
श्री रिज़वान रिज़वी, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, सिलौटा चाँद, कैमूर
श्री इन्द्रभूषण कुमार, शिक्षक, सहयोगी माध्यमिक विद्यालय, हाजीपुर, वैशाली
प्राथमिक विज्ञान
श्री मनोज त्रिपाठी, प्रखंड साधनसेवी, बरहारा, भोजपुर
श्री शशिकान्त शर्मा, प्रखंड साधनसेवी, आरा, भोजपुर
श्री रणबीर सिंह, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, आदर्श आवासीय मध्य विद्यालय शिक्षक संघ, सहरसा
माध्यमिक विज्ञान
श्री जी.वी.एस.आर प्रसाद
श्री मुकुल कुमार, शिक्षक, सहायक शिक्षक, गोरखनाथ सूर्यदेव माध्यमिक विद्यालय, राजापाकर वैशाली

TESS-India (Teacher Education Through School Based Support) का लक्ष्य है भारत में मुक्त शैक्षिक संसाधनों के द्वारा प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर शिक्षकों के कक्षा अभ्यासों को बेहतर करना। ये संसाधन शिक्षकों के छात्र–केन्द्रित, भागीदारी दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायता करेंगे।

TESS-India के मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Education Resources – OERs) शिक्षक/शिक्षिकाों को स्कूल की पाठ्यपुस्तक के लिए सहायक पुस्तिका प्रदान करते हैं। ये संसाधन शिक्षकों के लिए गतिविधियाँ प्रदान करते हैं जो वे कक्षा में अपने छात्रों के साथ कर सकते हैं। साथ ही इनमें केस स्टडी भी हैं जो ये दर्शाते हैं कि किस प्रकार दूसरे शिक्षकों ने उस विषय को सिखाया है। संबंधित संसाधन शिक्षकों को पाठ योजना बनाने में और विषय पर ज्ञान वर्धन करने में उनकी सहायता करते हैं।

TESS-India के मुक्त शैक्षिक संसाधन भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल हैं। ये *भारतीय तथा अतंर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार* किये गये हैं *और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट उपयोग के लिए उपलब्ध है (http://www.tess-india.edu.in)* । मुक्त शैक्षिक संसाधन अनेकों संस्करणों में उपलब्ध हैं जो प्रत्येक राज्य के लिए उपयुक्त है जहाँ TESS India कार्यरत है। उपयोगकर्ता इन संसाधनों को अनुकूल और स्थानीयकृत करने के लिए स्वतंत्र हैं ताकि ये स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भों को पूरा कर सकें।

TESS-India मुक्त विश्वविद्यालय, ब्रिटेन के नेतृत्व में तथा ब्रिटेन की सरकार द्वारा वित्त-पोषित है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई की कुछ गतिविधियों के साथ निम्न प्रतीक का उपयोग किया गया है: *. इससे संकेत मिलता है कि निर्दिष्ट अध्यापन संबंधी थीम के लिए TESS-India वीडियो संसाधनों को देखना आपके लिए उपयोगी होगा।*

TESS-India वीडियो संसाधन भारत में अनेक प्रकार की कक्षाओं के संदर्भ में मुख्य अध्यापन तकनीकों का वर्णन करते हैं। हमें आशा है कि वे आपको इसी प्रकार के अभ्यासों के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेंगे। उनका उद्देश्य पाठ (टेक्स्ट) पर आधारित इकाइयों के माध्यम से काम करने के आपके अनुभव का पूरक होना और उसे बढ़ाना है।

TESS-India वीडियो संसाधनों को ऑनलाइन देखा या TESS-India की वेबसाइट, http://www.tess-india.edu.in/ से डाउनलोड किया जा सकता है। वैकल्पिक रूप से, आप ये वीडियो सीडी या मेमोरी कार्ड के माध्यम से भी देख सकते हैं।

संस्करण 2.0 LL02v1
Bihar

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है.
http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

इस इकाई में आप एक कल्पनाशील, भाषा-समृद्ध कक्षा बनाने के सरल लेकिन फिर भी प्रभावी तरीकों के बारे में जानेंगे, ताकि विद्यालयी परिवेश में स्वाभाविक बातचीत और लेखन के अलग–अलग स्वरूपों के साथ आपके छात्र–छात्राओं का संपर्क बढ़ सके।

आपका परिचय ऐसे तरीकों से करवाया जाएगा, जिनके द्वारा आप विद्यालय के बाहर के मौखिक व लिखित संसाधनों से अपने छात्र–छात्राओं को परिचित करवा सकते हैं, अपनी कक्षा की दीवारों पर पाठों का उपयोग कर सकते हैं और आपको ऐसे क्रियात्मक, किफायती सुझाव भी दिए जाएंगे, जिनके द्वारा आप अपने छात्र–छात्राओं के पठन के लिए एक आनंददायक कोना बना सकते हैं।

आप इस इकाई में सीख सकते हैं

- आकर्षक लेखन-आधारित कक्षा की दीवारें कैसे बनाएं।
- अपने छात्र–छात्राओं के लिए एक पठन कोना (रीडिंग कॉर्नर) कैसे तैयार करें।
- कक्षा में मौखिक भाषा के स्रोत के रूप में रेडियो का उपयोग कैसे करें।

यह दृष्टिकोण क्यों महत्वपूर्ण है

पारंपरिक कक्षाओं में, शिक्षक/शिक्षिका ही मौखिक भाषा के मुख्य स्रोत होते हैं और पाठ्यपुस्तकें लिखित भाषा के मुख्य स्रोत होते हैं। समय की कमी और सीमित संसाधन इन विकल्पों में वृद्धि को हतोत्साहित करते हैं।

छात्र–छात्राओं की भाषा और साक्षरता के विकास के लिए बोलने और लिखने के विभिन्न स्वाभाविक स्रोतों के संपर्क और उपयोग से अत्यधिक लाभ होता है। आपके छात्र–छात्राओं की जानकारी को मौखिक और लिखित संवाद के विभिन्न सार्थक उदाहरणों द्वारा समृद्ध बनाकर आप उनकी कल्पनाशीलता को प्रोत्साहन देंगे और साथ ही कई तरह के विषयों के बारे में शब्दों और वाक्यांशों की उनकी समझ और रचना भी बढ़ाएंगे। यदि आप अपने छात्र–छात्राओं की घर की भाषा के उदाहरणों को कक्षा में शामिल करते हैं, तो आप यह प्रदर्शित करेंगे कि उनके अतिरिक्त भाषाई कौशलों को महत्व दिया जाता है और उनके सहपाठियों को उनसे जुड़ी अलग–अलग संस्कृतियों और परंपराओं की प्रशंसा करने का अवसर मिलेगा। इस प्रकार एक भाषा-समृद्ध कक्षा बनाने से आपके सभी छात्र–छात्राओं की शिक्षा पर एक सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

इस इकाई में ऐसे कई तरीके सुझाए गए हैं, जिनके द्वारा आप अपनी कक्षा को अधिक भाषा-समृद्ध बनाने की शुरुआत कर सकते हैं।

1 स्थानीय परिवेश में लेखन के उदाहरण

विद्यालय आने के पूर्व से ही छात्र–छात्राओं का परिचय लिखित भाषा के कई उदाहरणों के साथ हो जाता है - जैसे गाड़ियों पर, दुकानों के बोर्ड पर, सड़क की दिशाओं के बोर्ड पर, खाद्य पदार्थों के लेबल, विज्ञापन, पोस्टर, ब्रांड नाम, राजनैतिक नारे और दीवारों पर बने चित्र, पत्रकों में, किताबों में, अखबारों में और पत्रिकाओं में। निम्नलिखित गतिविधि में कक्षा में एक सरल पठन और चर्चा गतिविधि के आधार के रूप में स्थानीय परिवेश से लेखन के परिचित स्वरूपों के उदाहरण इकट्ठा करना शामिल है। यह ख़ास तौर पर छोटी उम्र के छात्र–छात्राओं के लिए उपयुक्त है।

चित्र 1: परिवेशी प्रिंट की सर्वव्यापकता को दर्शाने वाली सड़क।

गतिविधि 1: अपनी कक्षा में परिवेशी लेखन का उपयोग करना

अपने स्थानीय परिवेश में ऐसे लेखनों की एक सूची बनाएँ, जिनसे शायद आपके छात्र–छात्रा परिचित हैं या जिन्हें वे रोचक मानते हैं। घरों में, कार्यस्थल की आपकी यात्रा में, और विद्यालय के मैदानों में इसके उदारहण ढूंढें। आपने जो शब्द या वाक्यांश एकत्र किए हैं, उन्हें कागज़ की पट्टियों पर बड़े अक्षरों में लिखें और मोड़कर रख दें।

सबसे पहले अपने छात्र–छात्राओं को समझाएँ कि आपने क्या इकट्ठा किया है। उनकी जोड़ियाँ बनाएँ और पट्टियां वितरित करें। आप यादृच्छिक (randomly) रूप से ऐसा कर सकते हैं, जिसके लिए आप छात्र–छात्राओं की जोड़ियों को डिब्बे में से एक पट्टी उठाने को कह सकते हैं, या आप चयनात्मक रूप से ऐसा कर सकते हैं, जिसमें आप अपने छात्र–छात्राओं की क्षमता के अनुसार उन्हें पट्टियां आवंटित करेंगे।

छात्र–छात्राओं की जोड़ियों से उनकी पट्टियों को खोलने और ऊपर उठाकर रखने को कहें, ताकि उनके सहपाठी देख सकें और पढ़कर सुना सकें कि उन पर क्या लिखा हुआ है। हर मामले में, इस बात पर संक्षिप्त चर्चा करें कि यह लेखन कहाँ मिल सकता है। कुछ शब्दों और अभिव्यक्तियों के लिए आपकी तरफ से समझाने या आगे और जानकारी देने की आवश्यकता पड़ सकती है।

अपने प्रत्येक छात्र–छात्रा को एक खाली कागज़ दें और उनसे कहें कि अगले एक सप्ताह तक वे घर और विद्यालय के रास्ते में, अपने घर में या अपने आस-पड़ोस में नए शब्दों या वाक्यांशों को ढूंढें। इनका उपयोग इसी तरह की किसी जोड़े में गतिविधि के लिए करें या उन्हें दीवार पर प्रदर्शित करें, ताकि अन्य छात्र–छात्रा उन्हें पढ़ सकें और उनके बारे में बात कर सकें।

अपने छात्र–छात्राओं से कक्षा में कोई भी मुद्रित सामग्री लाने को कहें, जो उन्हें उनके घर में या गाँव में मिल जाए, जिसका अब उपयोग नहीं की जा रहा है और इससे अपने वर्गकक्ष की दीवार पर प्रदर्शित करें।

यदि आपके पास एक कैमरा और प्रिंटर उपलब्ध है, तो आप परिवेशी लेखनों के उदाहरणों के क्लोज़-अप चित्र ले सकते हैं और इनकी प्रतियाँ मुद्रित करके उनका वितरण या प्रदर्शन कर सकते हैं।

ज़रा सोचिए

- क्या आप इन गतिविधियों का उपयोग अपने छात्र–छात्राओं के मूल्यांकन के लिए कर सकते हैं?
- आप ज्यादा उन्नत छात्र–छात्राओं के लिए इस गतिविधि को कैसे अनुकूलित कर सकते हैं?

2 कक्षा में लेखन के उदाहरण

कक्षा में आपके छात्र–छात्राओं के पढ़ने के लिए लेखन के कई उदाहरण मौजूद हो सकते हैं। ऐसा लेखन ब्लैकबोर्ड पर, साइन बोर्ड और नोटिस बोर्ड पर, चार्ट, पोस्टर और लेबलों पर, तथा आपके छात्र–छात्राओं के कार्य के डिस्प्ले में हो सकता है।

केस स्टडी 1: कक्षा में लेखन से सीखना

सहरसा में कक्षा एक की शिक्षिका सुश्री श्रुति अपने छात्र–छात्राओं के लिए एक लेखन-समृद्ध कक्षा बनाने के बारे में अपना तरीका समझाती हैं।

मैं जानती हूँ कि मेरे छोटे छात्र–छात्राओं को कक्षा में सुनने और बोलने के कई मौकों की ज़रुरत है। हालांकि उनमें से ज्यादातर अभी पढ़ या लिख नहीं सकते, लेकिन मैं इस बात को समझती हूँ कि पाठ के अलग–अलग उदाहरणों से उनका परिचय करवाना कितना महत्वपूर्ण है, चाहे वह हस्तलिखित पाठ हो या मुद्रित हो।

मेरे पास रंगीन पोस्टरों का एक संग्रह है, जिसमें वर्णमाला और शब्द चार्ट आदि हैं। इन्हें मैं दीवार पर बच्चों की नज़रों की सीध में रखती हूँ।

मैं हर बच्चे के नाम के लेबल बनाती हूँ, जिस पर उन्हें चित्र बनाने को कहती हूँ। मैं इन पाठ को दीवार पर हुक के साथ लगाती हूँ, जहाँ वे अपने बैग रखते हैं। मेरे पास मुड़े हुए कार्डबोर्ड के नाम कार्डों का भी एक सेट है, जिसे मैं वहां रखती हूँ, जहाँ कुछ विशिष्ट गतिविधियों के लिए छात्र–छात्राओं को जोड़ियों में या छोटे समूहों में बिठाना चाहती हूँ। ये लेबल मेरे छात्र–छात्राओं के लिखे हुए नामों और उनके सहपाठियों के नामों को पहचानने में उनकी मदद करने के लिए उपयोगी हैं।

रंगीन कागज़ का उपयोग करके, मैं कक्षा की अलग–अलग विशेषताओं के लिए भी लेबल बनाती हूँ। इनमें 'दरवाज़ा', 'खिड़की', 'ब्लैकबोर्ड', 'आलमारी', 'टेबल', 'कुर्सी', 'डेस्क', और 'घड़ी' जैसे शब्द शामिल हैं।

मैं प्रत्येक वस्तु पर सही लेबल लगाने में अपने छात्र–छात्राओं की मदद मांगती हूँ। सबसे पहले मैं अक्षरों और मात्राओं पर ध्यान देते हुए ऊँची आवाज़ में शब्द पढ़कर सुनाती हूँ। फिर मेरे छात्र इशारा करते हैं कि वह लेबल कहाँ लगना चाहिए। कभी-कभी मेरे छात्र कक्षा की किसी अन्य वस्तु पर लेबल लगाने का सुझाव देते हैं। ऐसे में, मैं उनके सुझावों को लिखते समय अक्षरों के नाम बोलती हूँ।

कक्षा के एक हिस्से में मैंने वर्ड वॉल बनाई है। यहाँ मैं उन नए शब्दों को लिखती हूँ, जिनसे मेरे छात्र–छात्राओं का उस सप्ताह के दौरान परिचय हुआ है। मैं अपने छात्र–छात्राओं को खुद भी ये शब्द लिखने के लिए प्रोत्साहित करती हूँ।

चित्र 2: एक भाषा-समृद्ध कक्षा का उदाहरण।

ज़रा सोचिए

- सुश्री श्रुति के विचार किस प्रकार उनके छात्र–छात्राओं की भाषा और साक्षरता के विकास में योगदान कर रहे हैं?
- आप उनके किन विचारों को अपनी कक्षा में लागू कर सकते हैं?

गतिविधि 2: एक लेखन समृद्ध कक्षा बनाना

15 मिनट का समय उन तरीकों पर ध्यान देने के लिए अलग रखें, जिनके द्वारा आपकी कक्षा में लेखन प्रदर्शित होता है:

- यह किस रूप में है?
- क्या यह आपके छात्र–छात्राओं के लिए प्रेरणादायी है? यह उनके शिक्षण में किस तरह योगदान करता है?
- इसे कितने अंतराल पर बदला जाता है?
- यदि इसमें आपके छात्र–छात्राओं का काम शामिल है, तो प्रदर्शित चयन किस तरह समावेशक होता है?

अपने दो सहकर्मियों से बात करें। उनकी कक्षा की दीवारों पर लेखन के कौन-से उदाहरण दिखाई देते हैं?

आप अपनी कक्षा में छात्र–छात्राओं का जो कार्य प्रदर्शित करते हैं, उसकी सीमा में आप वृद्धि और बदलाव किस तरह कर सकते हैं? आप अपने छात्र–छात्राओं के लिए रोचक, आयु के उपयुक्त पठन सामग्रियाँ देने के लिए अपने खुद के लेखन का किस प्रकार कल्पनाशीलता से उपयोग कर सकते हैं? अपनी कक्षा की दीवारों के उपलब्ध स्थान की एक योजना बनाएँ और सोचें कि आप अधिक प्रभावी रूप से इसका उपयोग कैसे कर सकते हैं। अपने आप से यह संकल्प करें कि यदि संभव हो, तो आप हर पंद्रह दिनों में अपनी कक्षा में नए डिस्प्ले जोड़ेंगे या मौजूदा डिस्प्ले में से कुछ को बदलेंगे। अपने सहकर्मियों को भी ऐसा करने का प्रोत्साहन दें। नियमित रूप से एक दूसरे की कक्षाओं में जाकर एक दूसरे के वॉल प्रदर्शनों को देखें और उनसे सीखें।

3 कक्षा का पठन कोना

अपनी कक्षा में एक पठन कोना (रीडिंग कॉर्नर) बनाने से आपके छात्र–छात्राओं को एक ख़ास जगह मिलती है, जहाँ वे अपनी किताबें रख सकते हैं और उनकी सामग्री को स्वतंत्र रूप से देख सकते हैं।

कक्षा के रीडिंग कॉर्नर को बनाने और भरने में छात्र–छात्राओं को शामिल करना महत्वपूर्ण है। इस तरह वे भी इसका उपयोग और इसमें सुधार करना चाहेंगे।

चित्र 3: कक्षा का पठन कोना।

केस स्टडी 2: कक्षा का पठन कोना भरना

श्री दिलीप बिहार में एक प्राथमिक विद्यालय में कक्षा तीन को पढ़ाते हैं। यहाँ वे बता रहे हैं कि उन्होंने किस तरह अपनी कक्षा के पठन कोना (रीडिंग कॉर्नर) के लिए कुछ किताबें इकट्ठी कीं।

मैं जानता हूँ कि छोटी उम्र से ही किताबों का उपयोग करने का मौका मिलना छात्र–छात्राओं के लिए कितना महत्वपूर्ण होता है। हालांकि मेरे छात्र–छात्राओं को उनकी पाठ्यपुस्तकें पढ़ने में भी मज़ा आता था, लेकिन मैं चाहता था कि उन्हें देखने और पढ़ने के लिए और भी सामग्री मिले। हालांकि नई पुस्तकें खरीदने के लिए बहुत ही कम राशि उपलब्ध थी।

मेरे जिन रिश्तेदारों और दोस्तों के बच्चे बड़ी उम्र के थे, सबसे पहले मैंने उनसे पूछा कि क्या उनके घरों में कोई ऐसी किताब है, जिसकी अब उनके बच्चों को ज़रुरत नहीं है। मैं शिक्षा के लिए दान देने वाली जिन संस्थाओं के बारे में जानता था, मैंने उन्हें पत्र लिखकर पूछा कि क्या वे किसी तरह इसमें योगदान कर सकते हैं। अंत में मैंने कुछ पुस्तकें खरीदने के लिए अपने वार्षिक TLM (शिक्षण-अधिगम सामग्री) का उपयोग किया।

मैंने केवल दस पुस्तकों के साथ अपने रीडिंग कॉर्नर की शुरुआत की थी। दो वर्षों में ही मैंने कथाओं और कथेतर साहित्य की लगभग 60 पुस्तकों का कलेक्शन बना लिया, जो विभिन्न स्तरों के लिए उपयुक्त थीं। मेरे पास कई तरह की पत्रिकाएँ और अखबार भी हैं। मैं अब विद्यालय के अन्य शिक्षक/शिक्षिकाओं को भी ये देता हूँ।

गतिविधि 3: अपनी कक्षा में एक पठन कोना शामिल करना

यदि संभव हो, तो एक सहकर्मी के साथ काम करके, अपनी कक्षा में एक रीडिंग कॉर्नर के लिए योजना बनाएँ और आपके मन में आने वाले सभी विचारों को लिख लें। निम्नलिखित पर विचार करें:

- आपके पास उपयुक्त पुस्तकें और पठन सामग्री प्राप्त करने के कौन-से साधन उपलब्ध हैं?
- आपके छात्र–छात्रा किस तरह सामग्री की आपूर्ति में योगदान कर सकते हैं (उदहारण के लिए, खुद ही पुस्तकें तैयार करके)?
- आप अपनी कक्षा में रीडिंग कॉर्नर कहाँ बना सकते हैं?

- इसे सेट करने के लिए आपको किन चीजों की आवश्यकता है (उदाहरण के लिए किताबें रखने के लिए बक्से, बैठने के लिए दरी आदि)? आप इन चीजों को कहाँ रख सकते हैं?
- आप अपनी कक्षा की गतिविधियों में रीडिंग कॉर्नर का उपयोग किस तरह शामिल करेंगे?

संसाधन 1 में कुछ उपयोगी विचार दिए गए हैं, जो अपनी कक्षा में रीडिंग कॉर्नर तैयार करने में आपकी मदद करते हैं।

कक्षा के एक संसाधन के रूप में रेडियो

केस स्टडी 3: भाषा और साक्षरता के विकास के लिए रेडियो का उपयोग करना

श्रीमती रेखा बिहार के एक प्राथमिक विद्यालय में बहुवर्गीय (मल्टी-ग्रेड) शिक्षिका हैं। यहाँ वे बता रही हैं कि अपने भाषा पाठों में वे किस तरह एक संसाधन के रूप में रेडियो का उपयोग करती हैं।

मेरे विद्यालय में पाठ्यपुस्तकों के अलावा बहुत ही कम संसाधन उपलब्ध हैं। मैं अपने खाली समय में अक्सर रेडियो सुनती हूँ और मुझे पता चला है कि इसमें कई रोचक कार्यक्रम आते हैं। अब मैं नियमित रूप से रेडियो का उपयोग अपने छात्र–छात्राओं के भाषा पाठों में इनपुट के एक अतिरिक्त स्रोत के रूप में करती हूँ। मुझे यह अच्छा लगता है कि किस तरह इससे मैं अपनी कक्षा की बाहर की दुनिया से उनका परिचय करवा सकती हूँ।

मैं अखबार की रेडियो प्रोग्राम गाइड का उपयोग करके उपयुक्त कार्यक्रमों की पहचान उनमें शामिल विषयों के आधार पर करती हूँ। मैं कक्षा में कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण करना चाहती थी, इसलिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक था कि इनका समय उपयुक्त हो, लेकिन अब मेरे पास रिकॉर्डिंग सुविधा वाला एक रेडियो है, इसलिए मैं पहले से ही उन्हें चुन सकती हूँ और बाद में चला सकती हूँ।

अक्सर मैं अपने छात्र–छात्राओं को खासतौर पर तैयार किए गए शिक्षाप्रद कार्यक्रम सुनाती हूँ, क्योंकि ये स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किए जाते हैं और इनमें बूझने के लिए एक या दो संक्षिप्त कार्य अथवा अन्य गतिविधियाँ होती हैं। कार्यक्रमों के बाद हम हमेशा उनकी सामग्री के बारे में बात करने में समय बिताते हैं। यदि कोई बात समझ नहीं आई थी, तो इससे उसे समझने में मदद मिलती है। कभी-कभी पूरी कक्षा इसमें एक साथ भाग लेती है। कभी-कभी मैं अपने छात्र–छात्राओं के समूह बनाती हूँ और उनसे कहती हूँ कि वे साथ बैठकर कार्यक्रम के बारे में चर्चा करें। मैं अक्सर इन चर्चाओं के बाद अपने छोटे छात्र–छात्राओं को कार्यक्रम की सामग्री के बारे में संक्षेप में कुछ लिखने को कहती हूँ और अपने बड़े छात्र–छात्राओं को एक लंबी रिपोर्ट तैयार करने को कहती हूँ।

मैं कक्षा में कहानियों, नाटकों और धारावाहिकों का प्रसारण भी करती हूँ। इसके बाद उनके पात्रों, उनमें उठाए गए मुद्दों, या आगे क्या होगा, इस बारे में चर्चा होने लगती है। कभी कभी मैं अपने छात्र–छात्राओं को आमंत्रित करती हूँ कि वे अपने शब्दों में इसके संवाद लिखें और भूमिका अदा करें।

मुझे यह अच्छा लगता है कि किस तरह रेडियो कार्यक्रम अलग–अलग आवाजों, नई अभिव्यक्तियों और भाषा के अलग–अलग रजिस्टरों से मेरे छात्र–छात्राओं का परिचय करवाते हैं। कार्यक्रमों के दौरान यदि कोई अपरिचित लगने वाले शब्द आते हैं, तो मैं उन्हें लिख लेती हूँ और बाद में अपने छात्र–छात्राओं से पूछती हूँ कि क्या उन्हें वे शब्द मालूम हैं या क्या वे उनका अर्थ बता सकते हैं। कभी कभी वे सुनी गई भाषा पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं कि प्रस्तुतकर्ता ने एक शब्द का उच्चारण इस लहजे में किया या अमुक शब्द अथवा अभिव्यक्ति का उपयोग किया, जबकि इसके बजाय एक वैकल्पिक शब्द का उपयोग किया जा सकता था। इन अंतरों पर चर्चा करने से भाषा की समृद्धि और विविधता के बारे में उनकी जागरुकता बढ़ाने में मदद मिलती है।

मैंने अपने छात्र–छात्राओं की घर की भाषा में भी कार्यक्रम के एक छोटे अनुभाग के प्रसारण का प्रयोग किया है। जो छात्र–छात्रा इसे समझ सकते थे, उनसे मैंने कहा कि वे अपने सहपाठियों को बताएँ कि वक्ता ने क्या कहा है। इसके बाद मैंने उनसे वक्ता द्वारा उपयोग किए गए दो या तीन मुख्य शब्दों को दोहराने को कहा और बाकी कक्षा को मौखिक रूप से उन्हें दोहराने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने अपने परिचित शब्द अपने घर की भाषा में ब्लैकबोर्ड पर लिखे और शेष कक्षा ने अपनी अभ्यास पुस्तिकाओं में उनकी नकल की। हर कोई इस पाठ में पूरी तरह खोया हुआ था।

मेरे छात्र–छात्राओं के लिए रेडियो प्रसारण का उपयोग करने से उन्हें हर समय मेरी ही आवाज़ सुनते रहने के बजाय एक पूरक विकल्प मिलता है।

ज़रा सोचिए

- श्रीमती रेखा के रेडियो-आधारित पाठ उनके छात्र–छात्राओं को भाषा और साक्षरता के विकास के कौन-से अवसर देते हैं?
- क्या आपको लगता है कि कक्षा में रेडियो का उपयोग करने में कोई चुनौतियां हो सकती हैं? आप उनसे कैसे निपट सकते हैं?

मुख्य संसाधन 'सभी को शामिल करना' में इस बारे में अधिक विचार हैं कि कक्षा में किस तरह छात्र–छात्राओं की सहभागिता बढ़ाई जा सकती है, उदाहरण के लिए उनके घर की भाषा को महत्व देकर।

वीडियो: सभी को शामिल करना

गतिविधि 4: कक्षा में रेडियो का उपयोग करना

कक्षा में रेडियो कार्यक्रमों का उपयोग करने से पहले भाषा और साक्षरता के विकास में उनके उपयोग का अभ्यास करना उपयोगी होता है।

चित्र 4: कक्षा में रेडियो सुनना।

लगभग एक सप्ताह की अवधि में, ऐसे दो या तीन रेडियो कार्यक्रम सुनने का समय निकालें, जो आप आपके छात्र–छात्राओं के लिए आपको उपयुक्त लगते हों। इन्हें सुनते समय इस बारे में सोचें कि आप निम्नलिखित के सन्दर्भ में इनके प्रसारण से आपके छात्र–छात्राओं का क्या लाभ चाहते हैं:

- इसकी सामग्री के पहलू
- उनकी भाषा और साक्षरता का विकास।

इसके बाद, कल्पना करें कि आप कक्षा में हैं और ऊंची आवाज़ में बोलकर उस तरह के प्रश्नों और चर्चा के बिन्दुओं का अभ्यास करें, जिन्हें शायद आप प्रसारण के बाद अपने छात्र–छात्राओं से पूछेंगे, और ऐसा करते समय विषय का उनका ज्ञान और उनके भाषा व साक्षरता स्तरों पर विचार करें।

ऐसी एक या दो गतिविधियाँ रेखांकित करें, जो आपके छात्र प्रसारण के बाद प्रस्तुत कर सकते हैं। इनमें बोलना या लिखना अथवा दोनों का मिश्रण शामिल हो सकता है। इस बारे में सोचें कि आप अपने छात्र–छात्राओं का व्यवस्थापन किस प्रकार करेंगे, इसमें उन्हें कितना समय लगेगा और आप किस तरह अंत में कक्षा को एक साथ लाएँगे।

जब आप इस कौशल को कई बार दोहरा लें, तो एक कार्यक्रम चुनें, जिसका सीधा प्रसारण किया जा सकता हो, या जिसे रिकॉर्ड करके बाद में कभी आपके छात्र–छात्राओं के लिए फिर से चलाया जा सकता हो। जितना संभव हो, इन पाठों की योजना पहले से ही बनाएँ। इसके बाद इसे आज़मा कर देखें।

ज़रा सोचिए

- क्या पाठ आपकी उम्मीद के अनुसार हुआ?
- अगली बार आप अलग ढंग से क्या करेंगे?

एक भाषा-समृद्ध कक्षा बनाने के बारे में आगे के विचारों के लिए, संसाधन 2 'स्थानीय संसाधनों का उपयोग करना' को देखें।

वीडियो: स्थानीय संसाधनों का उपयोग करना

सारांश

इस इकाई में आपको कुछ सरल और किफायती तरीके बताए गए, जिनके द्वारा आप अपनी कक्षा को अधिक भाषा-समृद्ध बना सकते हैं। इसमें ऐसे विचारों का सुझाव दिया गया, जिनका उपयोग आप कक्षा में यह सुनिश्चित करने के लिए कर सकते हैं कि बोलने और लिखने के कई प्रकार के अलग–अलग स्रोतों से आपके छात्र–छात्राओं का परिचय होता है। इनमें लेखन-आधारित दीवार प्रदर्शन बनाने, आपके छात्र–छात्राओं के लिए एक लेखन कोना तैयार करने और कक्षा में रेडियो का उपयोग करने के सुझाव शामिल हैं। समय के साथ-साथ आप ऐसे सरल संसाधनों और गतिविधियों का सेट बना सकते हैं, जिनका उपयोग विभिन्न स्तरों वाले छात्र–छात्राओं के साथ पाठ्यपुस्तक के पाठों में वृद्धि करने और अपने परिवेश में वे जिस लेखन और बोलने के संपर्क में आते हैं, उनसे जुड़ने की प्रेरणा में वृद्धि के लिए कर सकते हैं।

संसाधन

संसाधन 1: अपनी कक्षा में एक आकर्षक रीडिंग कॉर्नर बनाना

विद्यालय की पाठ्यपुस्तकों की पूरक बन सकने वाली पठन सामग्रियों को ढूंढना कठिन हो सकता है, लेकिन आपको जितनी हो सके, उतनी प्रदान करनी चाहिए, जिन्हें आपके छात्र पढ़ना चाहेंगे। यहाँ चार ऐसे शिक्षक/शिक्षिकाओं से प्राप्त विचार दिए गए हैं, जो अपने विद्यालय में पुस्तक क्षेत्र और लाइब्रेरियों का विकास करते रहे हैं:

- रंगीन पत्रिकाओं से उपयुक्त पठन पाठ काटें और उन्हें पुस्तकों या चार्ट पर चिपकाएँ।
- जहाँ उपयुक्त हो, वहाँ अभिभावकों, समुदाय के सदस्यों या विद्यालय आने वाले मेहमानों से पुस्तकें और पत्रिकाएँ दान में मांगें।
- 'रूम टू रीड' और 'प्रथम' जैसे NGO से संपर्क करें और दान में किताबें माँगें।
- पुस्तकें खरीदने के लिए अपने TLM भत्ते का उपयोग करें।

अब इस बारे में सोचें कि आप किस तरह एक प्रेरणादायक पठन परिवेश तैयार कर सकते हैं। यहाँ आपके लिए लिए कुछ शुरूआती विचार दिए गए हैं:

पठन संसाधन एकत्र करना

यथा संभव अधिकाधिक पठन सामग्री इकट्ठा करें, ताकि आपका संग्रह धीरे-धीरे बदलता और बढ़ता रहे। सुनिश्चित करें कि आपका कलेक्शन पढ़ने की क्षमता के विभिन्न स्तरों को आकर्षित करता हो। उपलब्ध पुस्तकों में विभिन्न तरह के विषय शामिल करें, जैसे:

- कहानियों की किताबें
- खेल, प्रकृति, वस्तुएँ बनाने आदि के बारे में तथ्यात्मक पुस्तकें
- शब्दकोश और एटलस
- कविताएँ
- चुटकुलों और पहेलियों की किताबें
- यदि संभव हो, तो आपके छात्र–छात्राओं की घर की भाषाओं में पुस्तकें।

अपने कलेक्शन में जोड़ने के लिए अख़बार, पत्रिकाएँ और कॉमिक्स इकट्ठा करें। आपके छात्र–छात्राओं को अपने समुदायों से उपयुक्त पठन सामग्रियाँ ढूँढने के लिए प्रेरित करें।

पुस्तकें बनाना

आपके छात्र–छात्रा उनकी खुद की कविताओं या लघुकथाओं वाली पुस्तक बना सकते हैं। वे कोई लघु नाटक लिख सकते हैं या कोई पाठ जिस विषय पर केंद्रित था, उसके बारे में कोई पुस्तक विकसित कर सकते हैं। वे अपनी पुस्तक के लिए एक कवर भी डिज़ाइन कर सकते हैं, ताकि वह दूसरों को पुस्तक पढ़ने के लिए आकर्षित करे।

विशेष प्रदर्शन

किसी विशेष थीम, उदाहरण के लिए पानी या परिवहन, पर आधारित प्रदर्शन रखने से जिज्ञासा और चर्चा को प्रोत्साहन मिलता है और यह छात्र–छात्राओं को प्रेरित करने का एक अच्छा तरीका है कि वे स्वयं जानकारी हासिल करें। पुस्तक प्रदर्शनों के साथ साथ पोस्टर, चित्र और फोटो भी दीवार पर लगाए जा सकते हैं। छात्र–छात्राओं की रुचि बनाए रखने के लिए, नियमित रूप से वॉल डिस्प्ले को बदलते रहने की कोशिश करें और इनमें ऐसी सामग्रियाँ शामिल करें, जो उन्होंने खुद तैयार की हों।

आपके पास जो पठन सामग्रियां उपलब्ध हैं, यदि आप उनके बारे में अच्छी तरह जानते हैं, तो आप अपने अपने छात्र–छात्राओं का मार्गदर्शन करके उन्हें यह बता सकते हैं कि इनमें से कौन-सी सामग्रियों में उन्हें उनकी जिज्ञासाओं के उत्तर मिलेंगे।

एक पठन कोना बनाना

अपनी कक्षा या विद्यालय में एक पठन क्षेत्र या कोना बनाने के लिए स्थान की पहचान करें। यहाँ एक बड़ा साइनबोर्ड लगाएँ, ताकि इसका उद्देश्य स्पष्ट हो सके। आपके छात्र–छात्राओं के पढ़ने के लिए एक आकर्षक और आरामदायक स्थान बनाएँ। एक चटाई बिछाएँ या संभव हो तो कुर्सियां रखें।

पूछें कि क्या इकट्ठा की गई पठन सामग्रियों की देखभाल करने और इनका रिकॉर्ड रखने के लिए कोई छात्र लाइब्रेरियन के रूप में मदद करना चाहते हैं। पठन सामग्रियाँ चाहे दराजों में रखी हों या बक्सों में, लेकिन यह सुनिश्चित करें कि वे हर दिन प्रदर्शित की जाएं, ताकि छात्र उन तक आसानी से पहुँच सकें। नियमित रूप से अलग–अलग छात्र–छात्राओं को उन्हें बाहर निकालने और ठीक ढंग से रखने के काम के लिए आमंत्रित करें। छात्र–छात्राओं को प्रोत्साहित करें कि वे खराब हो जाने या फट जाने वाली किताबों की मरम्मत करने में आपकी मदद करें। आपके छात्र–छात्राओं की सहभागिता जितनी ज्यादा होगी, वे इस स्थान की और पढ़ने के इसके काम की उतनी ही ज्यादा ज़िम्मेदारी लेंगे।

संसाधन 2: स्थानीय संसाधनों का उपयोग करना

अध्यापन के लिए केवल पाठ्यपुस्तकों का ही नहीं – बल्कि अनेक शिक्षण संसाधनों का उपयोग किया जा सकता है। यदि आप विभिन्न ज्ञानेंद्रियों (दृष्टि, श्रवण, स्पर्श, गंध, स्वाद) का उपयोग करने वाले तरीकों की पेशकश करते हैं, तो आप छात्र–छात्राओं के सीखने के विभिन्न तरीकों को आकर्षित करेंगे। आपके इर्दगिर्द ऐसे संसाधन उपलब्ध हैं जिनका उपयोग आप कक्षा में कर सकते हैं, और जिनसे आपके छात्र–छात्राओं की शिक्षण-प्रक्रिया को समर्थन मिल सकता है। कोई भी विद्यालय शून्य या जरा सी लागत से अपने स्वयं के शिक्षण संसाधनों को उत्पन्न कर सकता है। इन सामग्रियों को स्थानीय ढंग से प्राप्त करके, पाठ्यचर्या और आपके छात्र–छात्राओं के जीवन के बीच संबंध बनाए जाते हैं।

आपको अपने नजदीकी पर्यावरण में ऐसे लोग मिलेंगे जो विविध प्रकार के विषयों में पारंगत हैं; आपको कई प्रकार के प्राकृतिक संसाधन भी मिलेंगे। इससे आपको स्थानीय समुदाय के साथ संबंध जोड़ने, उसके महत्व को प्रदर्शित करने, छात्र–छात्राओं को उनके पर्यावरण की प्रचुरता और विविधता को देखने के लिए प्रोत्साहित करने, और संभवतः सबसे महत्वपूर्ण रूप से, छात्र–छात्राओं के शिक्षण में समग्र दृष्टिकोण – यानी, विद्यालय के भीतर और बाहर शिक्षा को अपनाने की दिशा में काम करने में सहायता मिल सकती है।

अपनी कक्षा का अधिकाधिक लाभ उठाना

लोग अपने घरों को यथासंभव आकर्षक बनाने के लिए कठिन मेहनत करते हैं। उस पर्यावरण के बारे में सोचना भी महत्वपूर्ण है जहाँ आप अपने छात्र–छात्राओं को शिक्षित करने की अपेक्षा करते हैं। अपनी कक्षा और विद्यालय को पढ़ाई की एक आकर्षक जगह बनाने के लिए आप जो कुछ भी कर सकते हैं उसका आपके छात्र–छात्राओं पर सकारात्मक प्रभाव होगा। अपनी कक्षा को रोचक और आकर्षक बनाने के लिए आप बहुत कुछ कर सकते हैं – उदाहरण के लिए, आप:

- पुरानी पत्रिकाओं और पुस्तिकाओं से पोस्टर बना सकते हैं
- वर्तमान विषय से संबंधित वस्तुएं और शिल्पकृतियाँ ला सकते हैं
- अपने छात्र–छात्राओं के काम को प्रदर्शित कर सकते हैं
- छात्र–छात्राओं को उत्सुक बनाए रखने और नई शिक्षण-प्रक्रिया को प्रेरित करने के लिए कक्षा में प्रदर्शित चीजों को बदलें।

अपनी कक्षा में स्थानीय विशेषज्ञों का उपयोग करना

यदि आप गणित में पैसे या परिमाणों पर काम कर रहे हैं, तो आप बाज़ार के व्यापारियों या दर्जियों को कक्षा में आमंत्रित कर सकते हैं और उन्हें यह समझाने को कह सकते हैं कि वे अपने काम में गणित का उपयोग कैसे करते हैं। वैकल्पिक रूप से, यदि आप कला विषय के अंतर्गत पैटर्न और आकारों जैसे विषय पर काम कर रहे हैं, तो आप मेहंदी डिजाइनरों को विद्यालय में बुला सकते हैं ताकि वे भिन्न-भिन्न आकारों, डिजाइनों, परम्पराओं और तकनीकों को समझा सकें। अतिथियों को आमंत्रित करना तब सबसे उपयोगी होता है जब शैक्षणिक लक्ष्यों के साथ उनका संबंध सभी को स्पष्ट होता है और सामयिकता की साझा अपेक्षाएं मौजूद होती हैं।

आपके पास विद्यालय समुदाय में विशेषज्ञ उपलब्ध हो सकते हैं जैसे (रसोइया या देखभालकर्ता) जिन्हें छात्र–छात्राओं द्वारा अपने शिक्षण के संबंध में प्रतिबिंबित किया जा सकता है अथवा वे उनके साथ साक्षात्कार कर सकते हैं; उदाहरण के लिए, पकाने में इस्तेमाल की जाने वाली मात्राओं का पता लगाने के लिए, या विद्यालय के मैदान या भवनों पर मौसम संबंधी स्थितियों का कैसे प्रभाव पड़ता है।

बाह्य पर्यावरण का उपयोग करना

आपकी कक्षा के बाहर ऐसे अनेक संसाधन उपलब्ध हैं, जिनका प्रयोग आप अपने पाठों में कर सकते हैं। आप पत्तों, मकड़ियों, पौधों, कीटों, पत्थरों या लकड़ी जैसी वस्तुओं को एकत्रित कर सकते हैं (या अपनी कक्षा से एकत्रित करने को कह सकते हैं)। इन संसाधनों को अंदर लाने से कक्षा में रूचिकर प्रदर्शन तैयार किए जा सकते हैं जिनका संदर्भ पाठों में किया जा सकता है। इनसे चर्चा या प्रयोग आदि करने के लिए वस्तुएं प्राप्त हो सकती हैं जैसे वर्गीकरण से संबंधित गतिविधि, या सजीव या निर्जीव वस्तुएं। बस की समय सारणियों या विज्ञापनों जैसे संसाधन भी आसानी से उपलब्ध हो सकते हैं जो आपके स्थानीय समुदाय के लिए प्रासंगिक हो सकते हैं – इन्हें शब्दों को पहचानने, गुणों की तुलना करने या यात्रा के समयों की गणना करने के कार्य निर्धारित करके शिक्षा के संसाधनों में बदला जा सकता है।

कक्षा में बाहर से वस्तुएं लाई जा सकती हैं- लेकिन बाहरी स्थान भी आपकी कक्षा का विस्तार हो सकते हैं। आम तौर पर सभी छात्र–छात्राओं के लिए चलने-फिरने और अधिक आसानी से देखने के लिए बाहर अधिक जगह होती है। जब आप सीखने के लिए अपनी कक्षा को बाहर ले जाते हैं, तो वे निम्नलिखित गतिविधियो को कर सकते हैं:

- दूरियों का अनुमान करना और उन्हें मापना
- यह दर्शाना कि घेरे पर हर बिन्दु केन्द्रीय बिन्दु से समान दूरी पर होता है
- दिन के भिन्न समयों पर परछाइयों की लंबाई रिकार्ड करना
- संकेतों और निर्देशों को पढ़ना

- साक्षात्कार और सर्वेक्षण आयोजित करना
- सौर पैनलों की खोज करना
- फसल की वृद्धि और वर्षा की निगरानी करना।

बाहर, उनका शिक्षण वास्तविकताओं तथा उनके स्वयं के अनुभवों पर आधारित होता है, तथा शायद अन्य संदर्भों में अधिक लागू हो सकता है।

यदि आपके बाहर के काम में विद्यालय के परिसर को छोड़ना शामिल हो तो, जाने से पहले आपको विद्यालय के प्रधानाध्यापक की अनुमति लेनी चाहिए, समय सारणी बनानी चाहिए, सुरक्षा की जाँच करनी चाहिए और छात्र–छात्राओं को नियम स्पष्ट करने चाहिए। इससे पहले कि आप बाहर जाएं, आपको और आपके छात्र–छात्राओं को यह बात स्पष्ट रूप से पता होनी चाहिए कि किस संबंध में जानकारी प्राप्त की जाएगी।

संसाधनों का अनुकूलन करना

चाहें तो आप मौजूदा संसाधनों को अपने छात्र–छात्राओं के लिए कहीं अधिक उपयुक्त बनाने हेतु उन्हें अनुकूलित कर सकते हैं। ये परिवर्तन छोटे से हो सकते हैं किंतु बड़ा अंतर ला सकते हैं, विशेष तौर पर यदि आप शिक्षण को कक्षा के सभी छात्र–छात्राओं के लिए प्रासंगिक बनाने का प्रयास कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, आप स्थान और लोगों के नाम बदल सकते हैं यदि वे दूसरे राज्य से संबंधित है, या गाने में व्यक्ति के लिंग को बदल सकते हैं, या कहानी में शारीरिक रूप से अक्षम बच्चे को शामिल कर सकते हैं। इस तरह से आप संसाधनों को अधिक समावेशी और अपनी कक्षा और उनकी शिक्षण-प्रक्रिया के उपयुक्त बना सकते हैं।

साधन संपन्न होने के लिए अपने सहकर्मियों के साथ काम करें; संसाधनों को विकसित करने और उन्हे अनुकूलित करने के लिए आपके बीच ही आपको कई कुशल व्यक्ति मिल जाएंगे। एक सहकर्मी के पास संगीत, जबकि दूसरे के पास कठपुतलियाँ बनाने या कक्षा के बाहर के विज्ञान को नियोजित करने के कौशल हो सकते हैं। आप अपनी कक्षा में जिन संसाधनों को उपयोग करते हैं उन्हें अपने सहकर्मियों के साथ साझा कर सकते हैं ताकि अपने विद्यालय के सभी क्षेत्रों में एक प्रचुर शिक्षण वातावरण बनाने में आप सबकी सहायता हो सके।

अतिरिक्त संसाधन

- NCERT's Department of Education in Languages (look under 'Activities' and 'Publications', in particular): http://www.ncert.nic.in/departments/nie/del/index_dl.html
- Room to Read, India: http://www.roomtoread.org/india
- TeachingEnglish Radio India: http://www.britishcouncil.in/teach/teachingenglish-radio-india

संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Austin, R. (ed.) (2009) *Letting the Outside In*. London: Trentham Books.

Bridges, L. (1995) *Creating Your Classroom Community*. Portland, ME: Stenhouse Publishers.

Department for Education and Skills (2006) *Learning Outside the Classroom: Manifesto*. London: DfES Publications. Available from: http://www.lotc.org.uk/wp-content/uploads/2011/03/G1.-LOtC-Manifesto.pdf (accessed 28 October 2014).

Gregory, M. (undated) 'Creating a classroom library' (online), Reading Rockets. Available from : http://www.readingrockets.org/article/creating-classroom-library (accessed 28 October 2014).

National Curriculum Framework 2005 – A Study Guide (2006) 'Position papers by focus: NCF 2005' (online). Available from: http://ncf2005.blogspot.co.uk/2009/07/position-papers-by-focus-groups-ncf.html (accessed 28 October 2014).

Webster, L. and Reed, S. (2012) *The Creative Classroom*. London: Collins.

अभिस्वीकृतियाँ

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/)। नीचे दी गई सामग्री मालिकाना हक की है तथा इस परियोजना के लिए लाइसेंस के अंतर्गत ही उपयोग की गई है, तथा इसका Creative Commons लाइसेंस से कोई वास्ता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि इस सामग्री का उपयोग अननुकूलित रूप से केवल TESS-India परियोजना के भीतर किया जा सकता है और किसी भी बाद के OER संस्करणों में नहीं। इसमें TESS-India, OU और UKAID लोगो का उपयोग भी शामिल है।

इस इकाई में सामग्री को पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति के लिए निम्न स्रोतों का कृतज्ञतापूर्ण आभार:

चित्र 1: http://www.scillytoday.com/2012/08/09/islanders-return-from-doe-trip-to-india/india-street-scene/ (Figure 1: http://www.scillytoday.com/2012/08/09/islanders-return-from-doe-trip-to-india/india-street-scene/)

चित्र 4: https://www.flickr.com/photos/jordibernabeu/15155376815/ (Figure 4: https://www.flickr.com/photos/jordibernabeu/15155376815/)

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन शिक्षक प्रशिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों और छात्र–छात्राओं के प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।